

अंक 20
वर्ष 2015-16

ISSN-0976-5778

इसरी



हिन्दी विभाग,
DEPARTMENT OF HINDI
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
DOCTOR HARISINGH GOUR VISHWAVIDYALAYA, SAGAR -470003 (M.P.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय A CENTRAL UNIVERSITY)

अनुक्रम

संपादकीय

5

खण्ड-क : स्मरण : रमेश दत्त दुबे

1. वह कहीं नहीं गया पुरानी सदरी पहीनकर विचार की तरह	— आशुतोष	7
2. आसमान के टूटते रंगों सी आकुल कविता	— मिथलेश शरण चौबे	12
3. हिन्दी-बुंदेली के बीच की आकर्षक पगडण्डी : रमेशदत्त दुबे	— राजेन्द्र यादव	16
4. बाल मन कोमल राग : 'तिल के फूल—तिली के दाने'	— हिमांशु कुमार	19
5. मिट्टी से जुड़े साहित्यकार 'रमेशदत्त दुबे'	— गजाधर सागर	22
6. श्रद्धा अठवाई	— हरगोविन्द विश्व	26
7. साहित्य के पुरोधा रमेशदत्त दुबे	— महेश तिवारी	27
8. 'दददा' रमेश दत्त दुबे एक आत्मीय व्यक्तित्व	— वर्षा सिंह	29
9. गाँव मोहल्ले की संवेदना का कवि रमेश दत्त दुबे	— छाया चौकसे	31
10. संवाद के मुखर पैरोकार : रमेशदत्त दुबे	— शरद सिंह	34
11. अमानवीकरण के विरुद्ध विनम्र हस्तक्षेप	— अफरोज बेगम	37
12. टोला : दर्द के आदत बन जाने की दास्तान	— अमरेन्द्र त्रिपाठी	41

खण्ड-ख : बुन्देली भाषा, साहित्य, संस्कृति और लोक

1. मन को गोकुल बनाती, मायूस सागरी की 'ब्रजरज'	— नरेन्द्र सिंह	49
✓ 2. "समाज और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में बुन्देली लोक साहित्य का महत्व"	— अरविन्द कुमार	53
3. लोक जीवन के कवि माधव शुक्ल "मनोज"	— अतुल कुमार श्रीवास्तव	58
4. बुन्देली अहाने	— अजीत श्रीवास्तव	62
5. बुन्देलखण्ड 1857 के बाद बुन्देली काव्यांश	— कैलाश मड़बैया	63
6. बुन्देली लोकभाषा और संस्कृति	— सीमा तिवारी	65
7. लोक का स्वरूप और बुन्देली लोक कथाएँ	— विवेकानंद उपाध्याय	68
8. आदिवासी लोकगीत	— मनीष कुमार	73
9. ईसुरी के काव्य में नारी	— दुर्गेश दीक्षित	77
10. 'ईसुरी' की दार्शनिकता	— लक्ष्मी पाण्डेय	80

बुन्देली लोक साहित्य का महत्व

अरविन्द कुमार*

किसी भी समाज की निधि वहाँ की संस्कृति होती है और वहाँ की संस्कृति उस समाज के लोक में बसती है। समाज और संस्कृति का सम्बन्ध अटूट होता है चाहे भोजपुरी लोक साहित्य हो या अवधी लोक साहित्य हो, या बुन्देली लोक साहित्य हो, अथवा किसी भी लोक साहित्य की बात करें तो उसमें उस समाज का प्रतिबिम्ब दृष्टिगत होता है। जैसा कि अवगत है साहित्य और समाज का सम्बन्ध, उसी तरह से स्थायी है जिस तरह से दर्पण और व्यक्ति का सम्बन्ध।

प्रो. बलभद्र तिवारी के अनुसार, मानव जीवन की दृश्यमान एवं भासमान क्रियाओं को संयोजित एवं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करने वाली अबाध चेतना ही किसी जाति की संस्कृति में परिगणित की जाती है। समाज, जाति, देश के अभिवत सर्वभूतेषु की तरह संस्कृति का अमृतमय आलोक जीवन को प्रकाशित, स्पंदित और गतिशील बनाता है। यहीं से सभ्यता का प्राचीर पार्थिव उपकरणों से निर्मित होकर एक सांस्कृतिक विरासत का नाम पाता है। साहित्य में इसी की अभिव्यक्ति होती है। साहित्य की परिसीमा में धर्म, दर्शन, लोक, इतिहास, भाषा आदि सभी आ जाते हैं इसीलिए किसी क्षेत्र विशेष में किसी समाज और संस्कृति को जानने के लिए इन सबकी ऐतिहासिक एवं राजनैतिक, भासमान एवं दृश्यमान शिष्ट एवं लोक चेतना को पूरे परिदृश्य में आंकना अनिवार्य है¹।

बुन्देली साहित्य और लोक साहित्य की एक लंबी परम्परा है। जिसमें केवल तेरहवीं शताब्दी से आज तक के समाज और उसकी संस्कृति पर चेतना के अनेक महत्वपूर्ण बिन्दु अंकित हैं। इन्हें ही बुन्देली समाज और संस्कृति का पर्याय कहना असमीचीन है क्योंकि बुंदेलखण्ड का उद्भव और विकास बुंदेला राजा पंचम के प्रयासों से ही सम्भव नहीं हुआ है। इसके पूर्व की सांस्कृतिक, धार्मिक, पौराणिक पृष्ठभूमि में आज की बुंदेली समाज और संस्कृति के बीज दृष्टिगत होते हैं। इनको समायोजित करने के लिए पौराणिक, धार्मिक साहित्य और इतिहास की ओर जाना पड़ता है। बुंदेल, बुंदेली, बुंदेलखण्ड आदि शब्दों की भी उत्पत्ति हमें इन्हीं पौराणिक संदर्भों में ही मिलती है। विशाल वृहत्तर भारत में बुंदेलखण्ड का यह भूभाग जनपद काल से ही अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाता है²।

लोक साहित्य की यह अनन्य विशेषता है कि वह सम्पूर्ण समाज का प्रतिनिधित्व करता है। समाज का कोई वर्ग लोक साहित्य से अछूता नहीं है। शिष्ट साहित्य केवल पढ़े-लिखे लोगों का, अभिजात्य वर्ग का साहित्य होता है। उसमें निम्न वर्ग की साझेदारी कम से कम होती है, वह निम्न वर्ग द्वारा निम्न वर्ग के लिए नहीं होता। वह निम्न वर्ग को बहुधा मध्य वर्ग ही प्रस्तुत करता है। इसके साथ यह भी तथ्य है कि उसमें आधी दुनिया अर्थात् स्त्री वर्ग बहुत कम अंश में उपस्थित हो पाता है। शिष्ट वर्ग का

*सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग डॉ. हरी सिंह गौर वि.वि., सागर